International Journal of Applied Research 2020; 6(11): 314-320

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2020; 6(11): 314-320
www.allresearchjournal.com
Received: 01-09-2020
Accepted: 07-10-2020

पल्लवी गुप्ता
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
ल०ना०मि०विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ० रेणु कुमारी
शोध पर्यवेक्षक, विभागाध्यक्ष,
गृह विज्ञान विभाग, लोहिया
चरण सिंह महाविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
पल्लवी गुप्ता
शोधार्थी, गृह विज्ञान विभाग,
ल०ना०मि०विश्वविद्यालय,
दरभंगा, बिहार, भारत

किशोर के भावनात्मक विकास के फलस्वरूप चरित्र का विकास

पल्लवी गुप्ता, डॉ. रेणु कुमारी

प्रस्तावना:

किशोर जिस वातावरण में रहता है, उसके चारों ओर अनेक व्यक्ति होते हैं। सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुसार व्यवहार करना सीखना एक मन्द और लम्बी प्रक्रिया है, परन्तु किशोर के लिए आवश्यक है कि विद्यालय जाने से पहले किशोर थोड़ा-थोड़ा उचित-अनुचित सीखने लग जाता है। बाल्यावस्था की समाप्ति तक उससे कुछ आशा की जाती है कि उसमें कुछ मूल्यों का विकास हो जायेगा और उसमें भले-बुरे की भावना (Conscience) का इतना विकास हो जायेगा कि वह स्वयं नैतिक चयन (Moral Choice) करने लग जायेगा। किशोरावस्था के प्रारम्भ में किशोर थोड़ा-थोड़ा यह समझने लग जाते हैं कि समाज के नैतिक मूल्यों के साथ अनुरूपता (Conformity) स्थापित करने में उनका व्यक्तिगत लाभ है। इसके अतिरिक्त कुछ किशोर ऐसे भी होते हैं जो समाज के नैतिक मूल्यों को नहीं मानते हैं। यह किशोर या तो अपने आपको अधिक ठीक समझते हैं या अपने आपको समाज के नियमों से परे मानते हैं। इन किशारों को उस समय दण्ड देना पड़ता है जब समाज के लोग इनका तिरस्कार करते हैं। तिरस्कार स्वरूपी दण्ड उनके आत्म (Self) के लिए अधिक घातक है। इस दण्ड को देखते हुए नैतिक मूल्यों के अनुसार व्यवहार न करने से जो किशारों को आनन्द प्राप्त होता है, वह बहुत थोड़ा है। समाज के नैतिक मूल्यों के अधिगम के आधार पर ही किशोर भले-बुरे, उचित - अनुचित में अन्तर करना सीखता है। पाठकों के लिए मूल्य, नैतिक मूल्य और चरित्र, तीनों का अर्थ समझना आवश्यक है। साथ ही साथ चरित्र और नैतिक विकास में सम्बन्ध जानना भी आवश्यक है।

चरित्र (Character): बेंजामिन (D. Benjamin, 1958) ने चरित्र को परिभाषित करते हुए लिखा है कि चरित्र उन सब प्रवृत्तियों का योग है जो एक व्यक्ति में होती हैं। कारमाइकेल (L. Carmichael, 1954) के अनुसार, "चरित्र एक गत्यात्मक प्रक्रिया है। यह व्यक्ति की अभिवृत्तियों और बाह्य व्यवहार तरीकों (Ways) का पूर्ण योग है"।

नैतिक व्यवहार (Moral Behaviour): नैतिक व्यवहार को परिभाषित करते हुए हरलॉक (1974) ने लिखा है कि "सामाजिक समूह के नैतिक कोड के अनुरूप व्यवहार ही नैतिक व्यवहार है"। Moral शब्द Mores से बना है जिसका अर्थ प्रथाएँ, लोकरीतियाँ (Folkways) या शिष्टाचार (Manners) से है। किशारों में यह देखा गया है कि कोई भी किशोर अपने समाज

के सभी नैतिक गुणों को नहीं जानता है। जब वह किशोर हो जाता है और इस अवस्था में वह समाज के नैतिक मूल्यों के अनुसार व्यवहार नहीं करता है तो माना जाता है कि वह समाज की प्रत्याशाओं के अनुसार या तो व्यवहार करना नहीं चाहता है या उसे समाज की प्रत्याशाएँ ज्ञात नहीं हैं। एक समाज की True Morality से सम्बन्धित व्यवहार समाज के मानकों के अनुरूप ही नहीं होता है बल्कि व्यक्ति इसे स्वेच्छा से सीखते हैं। यद्यपि बच्चों में True Morality नहीं होती है परन्तु किशोरों में इसके दर्शन प्रारम्भ हो जाते हैं। किशारों में नैतिक अथवा चरित्र विकास के दो पक्ष होते हैं। प्रथम पक्ष बौद्धिक पक्ष (Intellectual Aspect) कहलाता है और दूसरा पक्ष भावात्मक पक्ष (Impulsive Aspect) कहलाता है। नैतिक विकास के लिए आवश्यक है कि किशारों को अन्य किशारों के साथ खेलने का पर्याप्त अवसर दिया जाय। इस प्रकार के अवसरों से बच्चा सामाजिक प्रत्याशाओं (Social Expectations) को ही नहीं सीखता है बल्कि उसे उचित - अनुचित का ज्ञान होने लग जाता है। साथ ही साथ वह यह भी समझने लग जाता है कि ये नैतिक मूल्य क्यों हैं ? इनकी आवश्यकता और महत्त्व क्या है? किशारों में नैतिक विका का अनुमान उसकी मित्र-मण्डली के आधार पर लगाया जा सकता है।

सामाजिक और नैतिक मूल्यों के अधिगम का महत्त्व

थॉम्पसन (G. G. Thompson, 1965) का विचार है कि किशोर में सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास के कारण ही विश्वास में दृढ़ता और समझ में प्रखरता आ सकती है। सामाजिक-नैतिक मूल्यों के कारण ही वह आदर्श विरोधी वस्तुओं के प्रति घृणा और आदर्श वस्तुओं के प्रति जागरूक हो सकता है। (1) एक किशोर जो सत्य, ईमानदारी, आज्ञा-पालन, आदि को समझता है तथा दैनिक जीवन में इनका महत्त्व भी जानता है तो वह निश्चय ही इन सामाजिक तथा नैतिक गुणों का सम्मान करेगा। एक बार यदि यह किशोर में विकसित हो जायें तो किशोर को किसी भी प्रकार का लालच क्यों न दिया जाय, वह अपने इन मूल्यों पर दृढ़ रहता है। वह अपनी ईमानदारी चन्द पैसों के लालच में नहीं छोड़ सकता है। (2) ये नैतिक मूल्य किशारों को आदर्श व्यवहार करने के लिए प्रेरित करते हैं। (3) एक किशोर यदि इन सामाजिक-नैतिक मूल्यों को अर्जित नहीं कर पाता है तो वह धीरे-धीरे समाज का एक अनुपयुक्त अंग (Social Misfit) समझा जाने लगता है। एक समाज के अधिकांश किशोर समाज के सामाजिक और नैतिक मूल्यों के अनुरूप व्यवहार करना सीखते हैं। (4) जब किसी किशोर में उपयुक्त मात्रा में सामाजिक और नैतिक मूल्यों का विकास हो जाता है तो उसमें इसी रूप में सुरक्षा की भावना (Feeling of Security) का विकास हो जाता है। किशोर में सुरक्षा की भावना जितनी ही अधिक होती है, उसमें नैतिक मूल्यों की भावना उतनी ही अधिक होती है।

किशोरों में नैतिकता का अधिगम किस प्रकार होता है?

किशारों में सामाजिक-नैतिक विकासक्रम के अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि अलग-अलग आयु-स्तरों पर किशोर के भीतर नैतिकता भी भिन्न-भिन्न स्तर की होती है जन्म के समय किशोर के भीतर न भले-बुरे की भावना होती है और न किसी प्रकार के मूल्य ही होते हैं, अत: वह नैतिकता रहित (Non-moral or Unmoral) होता है। नैतिकतापूर्ण व्यवहार करने से पूर्व आवश्यक है कि किशोर यह सीखे कि समाज की दृष्टि से क्या उचित है और क्या अनुचित है। किशोर को उचित - अनुचित का काफी कुछ ज्ञान उस समय तक। हो जाता है,जब वह अपने साथी समूह (Peer Group) के सम्पर्क आते हैं। नैतिक विकास कुछ प्रमुख स्तर निम्न प्रकार से हैं-

(1) प्रयास और भूल के स्तर (Level of Trial and Error): नैतिकता के विकास का प्रारम्भिक स्तर प्रयास और भूल का स्तर है। प्रारम्भ में किशोर नैतिक व्यवहारों को प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त के आधार पर सीखता है। लगभग दो वर्ष की आयु तक वह प्रयत्न और भूल के आधार पर ही सीखता है। चूँकि लगभग दो वर्ष की अवस्था तक किशोर का ज्ञान बहुत सीमित होता है, अतः परिवार में उसे जो ट्रेनिंग दी जाती है, उसका उस पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ता है। उसे नैतिकता के सम्बन्ध में जो कुछ सिखाया जाता है, सीखता है, फिर भूल जाता है, फिर सीखाया जाता है और फिर भूल जाता है। इस प्रकार प्रयास और भूल का क्रम चलता रहता है।

(2) पुरस्कार और दण्ड (Reward and Punishment): पुरस्कार और दण्ड को प्रलोभन और भय की भी संज्ञा दी जा सकती है, इसके माध्यम से भी किशोर में नैतिक मूल्यों का विकास होता है। परिवार और पांठशाला में किशोर अनेक मूल्य, प्रलोभन और भय आदि के आधार पर, सीखता है। उसे पुरस्कार और दण्ड द्वारा समय-समय पर यह बताया जाता है कि कौन-सा व्यवहार और कार्य उचित है या अनुचित। नैतिक दृष्टि से उपयुक्त कार्यों और व्यवहारों को किशोर परिवार के

बड़े-बूढ़ों के भय के कारण और विद्यालय में गुरुजनों के भय के कारण भी सीखता है, साथ ही साथ बड़े-बूढ़ों और गुरुजनों से मिलने वाले प्रलोभनों के आधार पर भी वह सीखता है। माता-पिता और गुरुजनों के पर्याप्त भय के कारण वह झूठ बोलना, धोखा देना, वस्तुओं या पैसों की चोरी करना जैसे मूल्य नहीं सीख पाता है। उसे मालूम हो जाता है कि बुरे व्यवहारों के लिए उसे दण्ड प्राप्त होगा और अच्छे तथा समाज की प्रत्याशाओं के अनुसार व्यवहार अपनाने पर पुरस्कार भी प्राप्त हो सकता है। पुरस्कार और दण्ड या प्रलोभन और भय के आधार पर किशोर नैतिक मूल्यों को तभी सीखता है जब परिवार और विद्यालय के नैतिक मूल्यों में कोई विशेष अन्तर न हो क्योंकि परिवार में किशोर लिन नैतिक गुणों को सीखता है, लगभग वही गुण यदि विद्यालय में सिखाये जाते हैं तो किशोर में नैतिक मूल्यों का विकास सामान्य ढंग से होता है अन्यथा कोई न कोई दोष विकसित हो जाता है।

(3) रूढ़ियों और प्रथाओं का कार्य (Role of Customs and Traditions): श्रीवास्तव और उनके सहयोगियों (D. N. Srivastava, *et al*., 1978) ने प्रथा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "प्रथा का अर्थ है-समाज से मान्यता प्राप्त कार्य और व्यवहार करने विधियाँ हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को स्थानान्तरित होती रहती हैं।" इसी प्रकार की रूढ़ियों को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "रूढ़ियाँ ऐसी जनरीतियाँ हैं जिनके साथ समूह - कल्याण की भावना जुड़ी हुई होती है, इनके उल्लंघन पर समाज द्वारा निश्चित दण्ड दिया जाता है, उदाहरण के लिए माता-पिता की सेवा करना, ईमानदारी और दूसरों से सच बोलना आदि। किशोर जैसे-जैसे, बड़ा होता जाता है वह इन रूढ़ियों और प्रथाओं को सीखता जाता है। किशोर को रूढ़ियों और प्रथाओं का पालन करना सिखाया जाता है क्योंकि इनके पालन से समाज का कल्याण होता है। किशोर जैसे-जैसे रूढ़ियों और प्रथाओं का महत्त्व समझते जाते हैं, वे इनको सीखते जाते हैं।

(4) भले-बुरे की भावना का कार्य (Role of Conscience): समाज के कुछ व्यक्ति अब भी मानते हैं कि किशोर जब उत्पन्न होता है, उसमें भले-बुरे के ज्ञान की योग्यता होती है। आधुनिक युग में यह माना जाता हैं कि इस योग्यता का किशोर अधिगम करता है। आइजनेक (H. J. Eysenck, 1960) का विचार है कि किशोर की भले-बुरे की भावना (Conscience) को Superego या Inner light या Internalized Policeman कह सकते हैं। यह 'भले-बुरे की भावना किशोर की क्रियाओं को देखती रहती हैं जब कभी किशोर सामाजिक-नैतिक मूल्यों से हटकर व्यवहार करता है तब यह भावना उसे ऐसा करने से रोकती है। छोटे बच्चों का नैतिक व्यवहार Conscience से नियन्त्रित न होकर वातावरण सम्बन्धी प्रतिबन्धों से नियन्त्रित होता है। किशोर की आयु बढ़ने के साथ-साथ किशारों का नैतिक व्यवहार वातावरण सम्बन्धी प्रतिबन्धों के स्थान पर Conscience से नियन्त्रित होने लगता है।

(5) दोष और शर्म का कार्य (Role of Guilt and Shame): जब किशोर में Conscience का इतना विकास हो जाता है कि इसकी चेतावनी किशोर को उस समय मिलने लगती है जब वह नीतियों के विरुद्ध कार्य करता है, तब इस अवस्था में वह अपनी Conscience को व्यवहार के निर्देशक के रूप में प्रयुक्त करता है। परन्तु जब उसका व्यवहार उसकी Conscience के अनुसार नहीं हो पाता है तब वह शर्म और दोष का अनुभव करता है। परन्तु किशोर में शर्म और दोष उस समय ही उत्पन्न होते हैं जब उसमें उचित-अनुचित की भावना का एक निश्चित मात्रा में विकास हुआ हो तथा उसमें आत्म-आलोचना की योग्यता हो।

किशोरों में नैतिक विकास का प्रतिमान

नैतिक विकास के दो भिन्न पहलू हैं: (1) नैतिक व्यवहार का विकास, (2) नैतिक प्रत्ययों (Concepts) का विकास। अध्ययनों में यह देखा गया है कि नैतिक ज्ञान और व्यवहार में अधिक सम्बन्ध नहीं है। इसका मुख्य कारण है कि किशोर का व्यवहार ज्ञान के अतिरिक्त अन्य कारकों से भी प्रभावित होता है।

(1) नैतिक व्यवहार पक्ष (Moral Behaviour Phase): किशोर समाज की प्रत्याशायों के अनुसार व्यवहार करनी प्रत्यक्ष शिक्षक (Direct Teaching) या प्रयत्न एवं भूल या तादात्मीकरण (Identification) से सीखता है। इनमें प्रयत्न और भूल को छोड़ कर अन्य दो विधियाँ बहुत अधिक लोकप्रिय हैं। प्रत्यक्ष शिक्षण के द्वारा किशारों को समझाया जा सकता है कि क्या उचित है और क्या अनुचित तथा समाज की क्या प्रत्याशाएँ हैं। प्रत्यक्ष शिक्षण के साथ पुरस्कार, सामाजिक अनुमोदनं (Social Approval) प्रशंसा, आदि यदि जुड़ा हुआ है तो किशोर पर प्रत्यक्ष शिक्षण का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है।

अध्ययनों (J. Gabriel, 1966; R. M. Gagne & V. K. Wiegand, 1968) में यह देखा गया है कि किशोर के नैतिक अधिगम में वही नियम कार्य करते हैं जो सामान्य अधिगम में कार्य करते हैं। इन अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि यदि परिवार, विद्यालय और खेल के समूह और साथी समूहों में नैतिक मूल्य समान होते हैं तो किशोर में इन नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित अमूर्त प्रत्यय शीघ्र निर्मित होते हैं तथा उसमें उचित-अनुचित की भावना का शीघ्र विकास भी हो जाता है परन्तु इन तीनों के नैतिक मूल्यों. में अन्तर होता है तब बच्चा भ्रम में पड़ जाता है कि उसका एक व्यवहार परिवार में तो मान्य है परन्तु विद्यालय में उसी के लिए दण्ड दिया जाता है। सामाजिक-नैतिक मूल्यों के अधिगम में स्थानान्तरण (Transfer) के नियम भी कुछ परिस्थितियों में कार्य करते हैं। बच्चे दूसरे बच्चों और प्रतिरूपों (Models) के व्यवहार प्रतिमानों का तादात्मीकरण (Identification) भी करते हैं। अध्ययनों में यह देखा गया है कि बच्चा उस व्यक्ति के व्यवहार प्रतिमानों के साथ अधिक तादात्मीकरण स्थापित करता है जो उस बच्चे के व्यवहार की प्रशंसा करते हैं।

(2) नैतिक प्रत्ययों का विकास (Development of Moral Concepts): यह नैतिक विकास का द्वितीय पक्ष है। इस पक्ष के अन्तर्गत किशोर उचित और अनुचित के नियमों और मूल्यों को सीखता है। वह जो भी नैतिक मूल्य सीखता है, वे सभी मौखिक होते हैं या अमूर्त रूप में होते हैं। किशोर में नैतिक मूल्यों का विकास तभी होता है जब उसमें पर्याप्त मात्रा में मानसिक क्षमताओं का इतना विकास हो जाता है कि वह सीखे गये नैतिक मूल्यों का सामान्यीकरण कर लेता है।

नैतिक मूल्यों के अधिगम में किशोर को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इनमें से कुछ प्रमुख कठिनाइयाँ निम्न प्रकार से हैं— (1) नैतिक मूल्यों के विकास के लिए उपयुक्त मात्रा में बौद्धिक क्षमताओं का विकास आवश्यक है क्योंकि इन्हीं क्षमताओं के द्वारा किशोर नैतिक मूल्यों के अर्थ का ज्ञान प्राप्त करता है और सीखता है। (2) जब परिवार और स्कूल आदि के नैतिक मूल्य भिन्न-भिन्न होते हैं तो इस अवस्था में बच्चा भ्रम में पड़ जाता है कि परिवार में जो उचित समझा जाता है उसी व्यवहार के लिए स्कूल में दण्ड मिलता है। (3) बच्चों को नैतिक मूल्यों को सीखने में उस समय भी कठिनाई होती है जब परिवार के लोग नैतिक मूल्य के ऋणात्मक' पक्ष पर अधिक बल देते हैं और धनात्मक पक्ष पर कम बल देते हैं। (4) बच्चों को नैतिक मूल्यों को सीखने में उस समय भी कठिनाई होती है जब एक समूह द्वारा एक व्यवहार को उचित और दूसरे समूह द्वारा उसी व्यवहार को अनुचित समझा जाता है।

नैतिक मूल्यों के अधिगम में किशोर को जो कठिनाइयाँ होती हैं, उनमें कभी-कभी उसे इस बात का भी भ्रम हो सकता है कि समाज और समूह किशोर के नैतिक मूल्यों के सम्बन्ध में क्या प्रत्याशाएँ रखता है। इस प्रकार का भ्रम किशोर को जब होता है तब उसकी नैतिक मूल्यों को सीखने की प्रक्रिया मन्द पड़ जाती है। भ्रम की अवस्था में द्वितीय बुरा प्रभाव यह पड़ता है कि किशोर में नैतिक मूल्यों के प्रत्यय स्पष्ट ढंग से विकसित नहीं हो पाते हैं। तृतीय बुरा प्रभाव यह पड़ सकता है कि किशोर में नैतिकता से सम्बन्धित निर्णय भी भ्रमपूर्ण हो सकते हैं।

नैतिक विकास की अवस्थाएँ

1. बचपनावस्था में नैतिक विकास (Moral Development in Babyhood): गल्यावस्था में न तो विवेक शक्ति होती है और न कोई मूल्य ही विकसित होते हैं अतः तो वह नैतिक होता है और न अनैतिक। बहुधा बच्चे उस कार्य या व्यवहार को अच्छा समझते हैं जिसमें उन्हें सुखद अनुभव होते हैं तथा उसे बुरा समझते हैं जिसमें उन्हें सुखद अनुभूति नहीं होती है। अनुशासन (Discipline) के द्वारा माता-पिता किशोर को उचित व अनुचित का ज्ञान कराते हैं। किशारों को दण्ड के द्वारा भले-बुरे की शिक्षा देते, समय माता-पिता को यह ध्यान रखना चाहिए कि दण्ड देने से पूर्व किशोर को इस बात का ज्ञान हो कि क्या अनुचित है अथवा किसलिए उसे दण्ड दिया जा रहा है। इस अवस्था में माता-पिता को यह चाहिए कि किशोर को उचित-अनुचित की पर्याप्त शिक्षा देने के बाद ही दण्ड विधि अपनाएँ। माता-पिता को किशोर को उसी अवस्था में दण्ड देना चाहिए जब बाल जान बूझ कर अनैतिक व्यवहार करें।

2. पूर्व बाल्यावस्था में नैतिक विकास (Moral Developmenrin Early Childhood): पूर्व बाल्यावस्था लगभग तीन से छः वर्ष तक की अवस्था है। इस अवस्था में किशोर की मानसिक क्षमताओं का विकास इतना नहीं होता है कि वह नैतिकता या उचित-अनुचित के अमूर्त सिद्धान्तों या नियमों को सीख ले। इस अवस्था में वह विशिष्ट परिस्थितियों से सम्बन्धित नैतिक व्यवहार अवश्य सीख लेता है। इस अवस्था में किशारों की स्मृति इतनी दुर्बल होती है कि उन्हें एक दिन जो उचित व अनुचित की शिक्षा दी जाती है, दूसरे दिन

उन्हें इसकी याद नहीं रहती है। जब किशोर लगभग तीन-चार वर्ष का होता है तब माता-पिता उसे आक्रामक व्यवहार पर आत्मनियन्त्रण की शिक्षा देते हैं तथा उसे इस बात की भी शिक्षा दी जाती है कि वह दूसरों की सामग्री को नष्ट न करे।

लड़कियों की अपेक्षा लड़के अधिक दुराचारी (Misdemeanors) होते हैं। किशोर में किस प्रकार का सामाजिक और नैतिक विकास होगा, यह बहुत-कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि किशोर का लालन-पालन किस विधि और किस वातावरण में हुआ है।

3. उत्तर - बाल्यावस्था में नैतिक विकास (Moral Development in Late Childhood): उत्तर-बाल्यावस्था लगभग छः से बारह वर्ष तक की अवस्था है। इस अवस्था में उसका नैतिक विकास मुख्यतः उसके समूह से सर्वाधिक प्रमाणित होता है। इस अवस्था में वह सीखे गये नैतिक मूल्यों का सामान्यीकरण करने लग जाता है। उदाहरण के लिए, किशोर इससे पहली विकास अवस्था में ही यह सीख जाता है कि चोरी करना बुरी बात है। इस अवस्था में वह इस नैतिक व्यवहार का सामान्यीकरण कर लेता है अर्थात् वह समझने लग जाता है कि पैसा या वस्तु या खिलौना आदि किसी भी चीज की चोरी करना अच्छी बात नहीं है। इसी प्रकार वह झूठ बोलने से सम्बन्धित व्यवहार का सामान्यीकरण करने लग जाता है। वह यह समझ जाता है कि माता-पिता, सहपाठी, अध्यापक तथा किसी से भी झूठ बोलना बुरा व्यवहार है। इस अवस्था के अन्त तक किशोर का नैतिक व्यवहार लगभग वयस्क व्यक्तियों की भाँति हो जाता है। कुछ अध्ययनों में यह देखा गया है कि वह किशोर जिनकी I. Q. उच्च होती है, उनका नैतिक व्यवहार अन्य की तुलना में अधिक परिपक्व होता है।

इस अवस्था में भो किशारों को उस समय दण्ड देना चाहिए जब वे जान-बूझकर रौतानी करते हैं, उन्हें उस समय पुरस्कृत करना चाहिए जब वह समाज की दृष्टि से उचित व्यवहार करते हैं। इसी प्रकार उन्हें समय-समय पर नैतिक प्रत्ययों की शिक्षा भी देते रहना चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा देते समय किशारों को इस बात पर बल देना चाहिए और समझाना चाहिए कि एक व्यवहार जो समाज द्वारा मान्य है वह क्यों मान्य है और एक व्यवहार जो मान्य नहीं है वह क्यों मान्य नहीं है। किशोर में इस अवस्था में भले-बुरे की भावना (Conscience) का विकास प्रारम्भ होता है। इस अवस्था में नैतिक विकास में यह एक महत्त्वपूर्ण बात है।

किशोरों के अपराध कई प्रकार के होते हैं– (1) वह अपने स्वयं या दूसरों को नुकसान पहुँचाने वाले व्यवहार कर सकते हैं, (2) वह सम्पत्ति का दुरुपयोग या नुकसान कर सकते हैं, (3) वह अपने से बड़े व्यक्तियों की आज्ञा का उल्लंघन कर सकते हैं, (4) वह सेक्स से सम्बन्धित दुराचार कर सकते हैं अथवा शस्त्र आदि, जो वर्जित हैं, उन्हें रख सकते हैं। किशोरावस्था के अन्त तक किशोरों में अपेक्षाकृत अधिक निश्चित प्रत्ययों का विकास हो चुका होता है। इस अवस्था तक वह स्वेच्छा से नैतिक मूल्यों का पालन करने लग जाते हैं। वे विशिष्ट नैतिक प्रत्ययों का सामान्यीकरण भी अधिक करने लग जाते हैं। इस अवस्था के अन्त तक किशोरों में पर्याप्त मात्रा में सहनशीलता का विकास हो चुका होता है। इस अवस्था के अन्त तक उनमें उदारता का गुण भी अधिक मात्रा में विकसित हो जाता है। इस अवस्था के अन्त तक किशोरों का नैतिक व्यवहार वयस्कों के समान हो जाता है। नैतिक दृष्टि से परिपक्व किशोर समाज के नियमों और नैतिक मूल्यों के अनुसार व्यवहार भय के कारण न करके इसलिए करता है कि वह इन नियमों और मूल्यों को उपयुक्त समझता है।

निष्कर्ष

किशोरों में नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक

(1) बुद्धि (Intelligence): किशारों के नैतिक विकास को बुद्धि महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करने वाला एक कारक है। बौद्धिक क्षमता के आधार पर वह विभिन्न नैतिक मूल्यों के महत्त्व को समझता है तथा बुद्धि के आधार पर ही वह नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित प्रत्ययों का सामान्यीकरण करता है। अध्ययनों में यह देखा गया है कि जिन किशारों की बुद्धि अधिक होती है, उनमें मन्द बुद्धि किशारों की अपेक्षा नैतिक विकास अधिक मात्रा में तथा अधिक शीघ्र होता है। यह भी देखा गया है कि अधिक बुद्धि वाले किशारों में यदि चारित्रिक दोष उत्पन्न भी हो जाते हैं तो ये दोष थोड़ा समझाने-बुझाने पर ही समाप्त हो जाते हैं। अधिक बुद्धि वाले किशारों का व्यवहार मन्द बुद्धि वाले किशारों की अपेक्षा अधिक सुखद और समाज के नियमों के अनुसार होता है। अधिक बुद्धि वाला किशोर अपने आदर्श मार्ग से कम विचलित होता है। एक अध्ययन (W. Healy & A. F. Bronner, 1936) में यह देखा गया कि बाल अपराधों का दुर्बल बुद्धि से घनिष्ठ सम्बन्ध है। उसी प्रकार से टरमन (L. M. Terman, 1925) ने अपने अध्ययनों में देखा कि मन्द बुद्धि किशारों की अपेक्षा अधिक बुद्धि वाले

किशारों में ईमानदारी, सहनशीलता और सत्यवादिता के गुण अधिक मात्रा में पाये जाते हैं।

(2) **आयु (Age):** नैतिक विकास एक लम्बी और मन्द प्रक्रिया है। आयु के बढ़ने के साथ-साथ किशोर में नैतिक मूल्यों और व्यवहार का विकास होता है। आयु बढ़ने के साथ-साथ भले-बुरे, उचित और अनुचित के ज्ञान की वृद्धि होती जाती है। आयु बढ़ने के साथ-साथ वह सत्य और असत्य के अन्तर को भी समझने लगता है। सहानुभूति, सहनशीलता, ईमानदारी, भक्ति, सत्यवादिता, आदि गुणों का विकास भी आयु बढ़ने के साथ- साथ होता जाता है। एक अध्ययन (B. E. Tudor-Hart, 1926) में यह देखा गया कि बड़े बच्चों की अपेक्षा छोटे बच्चे झूठ बोलना अधिक बुरा समझते हैं। आयु बढ़ने के साथ-साथ किशारों में स्वार्थ (Selfishness) की भावना का स्वरूप अवश्य बदल जाता है। परन्तु इसकी मात्रा घटने के बजाय बढ़ जाती है। किशारों की आयु जब लगभग बारह-चौदह वर्ष की होती है तब वह जानबूझ कर या अपनी काम इच्छाओं के कारण सेक्स सम्बन्धी दुराचरण की ओर उन्मुख होते हैं।

(3) **यौन (Sex):** नैतिक मूल्यों का विकास यौन कारक से भी महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभावित होता है। लड़के और लड़कियों के चरित्र और नैतिक गुणों में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है। लड़के और लड़कियों की शारीरिक संरचना में तथा Glandular System में अन्तर होने के कारण उनमें कुछ भिन्न-भिन्न चारित्रिक और नैतिक विकास होता है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियां में प्रत्येक आयु स्तर पर दुराचरण (Misdemeanors) अधिक मात्रा में तथा अधिक आवृत्ति में पाया जाता है। वयःसन्धि और किशोरावस्था में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में चारित्रिक और नैतिक विकास अपेक्षाकृत तीव्र गति से होता है। लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक लज्जालु और कामुक होती हैं।

(4) **परिवार (Family):** किशोर का नैतिक और चारित्रिक विकास परिवार के सदस्यों और परिवार के वातावरण से भी प्रभावित होता है। नैतिक मूल्यों को किशोर सर्वप्रथम अपने परिवार से ही सीखना प्रारम्भ करता है। माता-पिता तथा अन्य परिवार के सदस्यों के विचार तथा आचरण किशोर के नैतिक व्यवहार विकास को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं। किशारों का लालन-पालन किस प्रकार किया जाता है, इसका भी उनके नैतिक विकास पर प्रभाव पड़ता है।

(5) **विद्यालय (School):** परिवार के बाद विद्यालय का भी किशोर के नैतिक और चारित्रिक विकास पर महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के शिक्षक, सहपाठी और वातावरण आदि सभी कुछ किशोर के नैतिक विकास में कुछ न कुछ योगदान अवश्य देते हैं। विद्यालय में किशोर का पाठ्यक्रम और अनुशासन का भी उसके नैतिक मूल्यों के विकास पर महत्त्वपूर्ण ढंग से प्रभाव पड़ता है। यदि विद्यालय का सामान्य अनुशासन और व्यवस्था ठीक होती है वहाँ पढ़ने वाले किशारों को चारित्रिक विकास के लिए सुन्दर वातावरण मिलता है।

(6) **धर्म (Religion):** किशोर जितना ही अधिक स्वस्थ और धार्मिक वातावरण में पला होगा वह उतना ही कम अनैतिक और दुराचारी होता है। धर्म का प्रभाव इस बात पर भी निर्भर करता है कि किशोर के माता-पिता धर्म में कितना विश्वास करते हैं। एक अध्ययन (H. Hartshore, *et al.*, 1928) में यह देखा गया कि दृढ़ नैतिक मूल्यों का विकास धार्मिक शिक्षा के कारण भी होता है। आजकल धर्म से लोगों का विश्वास कम होता चला जा रहा है, इसका एक मुख्य कारण यह है कि धर्म की आड़ में अनेक अनैतिक कार्य और व्यवहार दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। धर्म के इस नये पहलू की प्रगति ने लोगों को धर्म के प्रति ऋणात्मक रूप से सावधान कर दिया है।

(7) **मनोरंजन (Recreation):** आजकल के छोटे-बड़े सभी आयु के किशोर सिनेमा में दिखाई दे जाते हैं। सिनेमा देखने वालों में किशोरों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। दुराचार, अपराध, नारी सौन्दर्य, प्रेम, आदि की चरम सीमाएँ चलचित्रों में प्रदर्शित कर लोगों को अधिक से अधिक मात्रा में आकर्षित किया जाता है। यद्यपि कुछ चलचित्रों की कहानी के उद्देश्य सराहनीय होते हैं परन्तु किशारों और किशोरों की मानसिक योग्यता सीमित होने के कारण वे सिनेमा के उद्देश्यों और कहानी को कम समझ पाते हैं। वे सिनेमा से गन्दी बातें ही अधिक सीखते हैं। सिनेमा की भाँति टेलीविजन का प्रभाव भी है। रेडियो में भी अनेक प्रकार के प्रोग्राम प्रसारित किये जाते हैं परन्तु बच्चे अक्सर फिल्मी गीतों को अधिक सुनते हैं। इस प्रकार के प्रोग्राम का उनके नैतिक विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। किशोरावस्था तक किशारों को कहानियाँ, उपन्यास आदि पढ़ने का बहुत शौक हो जाता है। बहुधा निम्न स्तर के उपन्यास और कहानियाँ किशोरों को अधिक पसन्द आते हैं। इस प्रकार की पाठ्य सामग्री उनके नैतिक विकास को अवनति की ओर अग्रसर करने में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।

(8) साथी समूह (Peer Group): जब किशोर स्कूल जाने लग जाता है तब उसका साथी समूहों से सम्बन्ध बनने लग जाता है। किशोर की जैसे-जैसे आयु बढ़ती है उसके साथी समूहों की संख्या बढ़ती जाती है, पड़ौस और स्कूल में उसके बहुत से मित्र बन जाते हैं। किशोर इन मित्रों या साथी समूहों से बहुत अधिक प्रभावित होता है। वह अपने इन्हीं साथी समूहों से अनेक प्रकार के नैतिक मूल्यों को सीखता है।

(9) जन माध्यम (Mass Media): आधुनिक समाज में किशोर सिनेमा, टेलीविजन और मैगजीन या कॉमिक्स आदि से बहुत अधिक प्रभावित होता है। किशोर जिस प्रकार का साहित्य पढ़ता है उसी प्रकार का चरित्र उसमें विकसित होता है। आज टेलीविजन पर दिखाई जाने वाली फिल्मों से किशारों का चरित्र बहुत अधिक प्रभावित हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डा०डी० एन० श्रीवास्तव - अनुसंधान विधियाँ।
2. एच० के० कपिल - अनुसंधान विधियाँ एवं तकनीक।
3. सरयू प्रसाद चौबे - किशोर मनोविज्ञान के मूल तत्व।
4. कुमार, के. उदयपुर, 2011, बाल विकास और पारिवारिक सम्बन्ध, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
5. घोष, काजी आलम एवं व्यय, 2002, आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, तृतीय संस्करण
6. गोयल, आभा, 2014, मानव विज्ञान, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, प्रथम संस्करण
7. शेखावत, समता, 2007, किशोरावस्था, सोनू पब्लिकेशन्स, जयपुर, प्रथम संस्करण
8. बंसल, अविनाश, 2006, किशोर से युवा होने तक, अग्रवाल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, प्रथम संस्करण
9. मूरजानी, जानकी, 2012, किशोर मनोविज्ञान, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, प्रथम संस्करण
10. बर्मन, गायत्री, 2005, किशोरावस्था, शिवा प्रकाश, इन्दौर, द्वितीय संस्करण
11. जैन, शशिप्रभा, 2009, पूर्व बाल्यावस्था एवं बाल्यावस्था शिक्षा, शिवा प्रकाश, इन्दौर, प्रथम संस्करण
12. Baldwin AI. Theories of child development, Newyork, Wiley Bhatt N., (2007) Human Development A Lifespan Perspective, Jaipur, Aavishkar Publishers, Distributors, 1980.
13. Charles Duhigg, The Power of Habit